कोयल ग्राम पहुंचे शांतिदूत
दूसरो को नहीं, खुद को देखें–आचार्य महाश्रमण

कोयल 15 जून 2011

हरी–भरी पहाड़िया, मंद मंद चलती शीतल पवन, जोश से सरोबार जनसमूह, धवल सैनानियों के मध्य गतिशील शांतिदूत। अवसर था आचार्य महाश्रमण का कोयल ग्राम में पदार्पण का। जब आचार्यप्रवर गांव गुड़ा से प्रातः 6 बजे विहार कर मार्ग में आने वाली घाटियों को पार करते हुए कोयल ग्राम की सीमा में पधारे तो बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने जयकारों से आकाश को गुंजायमान कर दिया। आचार्य महाश्रमण जगह–जगह जैन–अजैन लोगों द्वारा किये जाने वाले स्वागत एवं अभिवादन को स्वीकार करते हुए, करीब 9.15 बजे ससंघ अपने प्रवास स्थल पर पहुंचे।

प्रवास स्थल के समीप आयोजित धर्मसभा को सबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति दूसरों को देखता है, पर दूसरों की अपेक्षा स्वयं को देखने का अभ्यास होना चाहिए। अगर खुद को देखने का प्रयास नहीं होता है तो मानव जीवन पाकर भी चिन्ता मणि रत्न की तरह ऐसे ही खो देता है। आत्मकल्याण का प्रयास होने पर ही यह जीवन सार्थक हो सकता है। आचार्यप्रवर ने कहा कि व्यक्ति को स्वयं की बुराई और अच्छाई का पता होना चाहिए। दूसरों की कमियां देखना सरल है पर खुद को पहचाना कठिन है। उन्होने कहा कि रणनीति के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए। सर्व प्रथम छोटी–छोटी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें तत्पश्चात बड़ी कमियों को हटाने में पुरुषार्थ लगना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने कोयल ग्राम में अपने आगमन की चर्चा करते हुए कहा कि कोयल से शिक्षा लेने की बात अनेक साहित्यों में मिलती है। कोयल सी मीठी वाणी का प्रयोग कर हम दूसरों को अपना बना सकते हैं। कोए की तरह स्थान बदलने से समस्या का समाधान नहीं होगा। समाधान के लिए स्वभाव को बदलना आवश्यक है। परिवार के किस सदस्य से कैसे बात करनी चाहिए, यह विवेक जाग जाये तो कलह की समस्या से निजात पाया जा सकता है। इससे पूर्व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने संबोधित किया।

एक दूसरे पर छिंटाकशी करने वालो को दी नसीहत

वाणी पर संयम रखें – आचार्य महाश्रमण

सापोल 16 जून 2011

जहां देश की प्रमुख राजनीतिक पार्टियों के नेता एक दूसरे पर छिंटाकशी में निम्नस्तर की भाषा का प्रयोग कर रहें है वहीं पांव पांव चलकर मेवाड़ की घाटियों में भ्रष्टाचार के उन्मूलन की अलख जगाने में पसीना बहाने वाले शांतिदूत आचार्य महाश्रमण ने वाणी पर संयम रखनें की नसीहत दी है। अन्ना हजारे एवं बाबा रामदेव के हल्ला बोल आन्दोलनों की बजाय व्यक्ति व्यक्ति को जागृत करने का प्रयास करने वाले आचार्य महाश्रमण ने राजसंमद जिले के सापोल ग्राम में स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि वाणी पर संयम रखना चाहिए। जब शरीर, मन, वाणी पर लगाम होगी तभी शांति से रहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि गलती होना मनुष्य का स्वभाव है, पर उस गलती को दोबारा न दोहराने का संकल्प हो तभी गलतियों का परिष्कार हो सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि हमारी प्रवृति शुभ–अशुभ दोनों हो सकती है, पर जो योगी होता है, विवेकशील होता है वह शुभ प्रवृति करने का लक्ष्य रखता है। उल्लेखनीय है कि आचार्य महाश्रमण अन्य आन्दोलनकारियों की तरह अनापशनाप बयानबाजी एवं नाम फैम से दूर अपने काम से वास्ता रखते हैं। उनके इस सौम्य व्यक्तित्व के कारण हजारों लोग भ्रष्टाचार को जड़मूल से उखाड़ने के लिए यथासंभव ईमानदारी का प्रयोग करने का संकल्प ले चुके हैं एवं नशा मुक्ति, भ्रूणहत्या निरोध, साम्प्रदायिक सौमनस्य रखने का नियम भी स्वीकार कर चुके हैं।

आचार्य महाश्रमण ने देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू एवं तात्कालिन पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय चरित्र निर्माण को लेकर सुर्खियों में आये अणुव्रत आंदोलन की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया था। अगर जीवन को सफल बनाना है तो उस आन्दोलन के छोटे–छोटे नियमों को जीने का अभ्यास करें। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आंदोलन का मूल संयम है। संयम, नैतिकता, अहिंसा इन तत्त्वों का विकास होने पर ही मानव निर्माण का कार्य निष्पन्न हो सकता है। स्वागत समारोह में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एवं मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।